International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 01, Issue 01)
Publishing Month: October 2013
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

महात्मा गाँधी की विचारधारा व भारीतय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका का मूल्यांकन

डॉ. प्रदुमन सिंह

सहायक प्रवक्ता (इतिहास विभाग)
राजकीय महिला महाविद्यालय, रोहतक

प्रकाशन की तिथि: अक्टूबर 01, 2013

भूमिका

महात्मा गाँधी की विचारधारा एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका का मूल्यांकन आधुनिक भारतीय इतिहास लेखन में एक विवादस्पद विषय रहा है। गांधी जी के राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रीय होने के बाद एक तरफ राष्ट्रीय आन्दोलन का सामाजिक आकार व्यापक हुआ, जनभागिदारी बढ़ी व आन्दोलन ने एक निश्चित स्वरूप प्राप्त किया दूसरी तरफ इसकी उसकी विचारधारा व कार्यो की एक वर्ग से आलोचना की। कम्यूनिस्टो ने उन्हे पूंजीपतियों का एजेंट माना अंग्रेजो ने शांति व्यवस्था का शत्रु, मुस्लिम लीग ने उन्हें हिन्दू हितों का पोशक माना। अतः आवश्यक हो जाता है कि उनकी विचारधारा व कार्यो का मूल्यांकन तार्किक ढंग से किया जाए।

मूल शब्दः *महात्मा गांधी, सत्य अहिंसा, राष्ट्रीय आन्दोलन।*

परिचय

मोहनदास करमचंद गांधी का जनम 2 अक्तूबर, 1869ई. को गुजरात के पोरबन्दर में हुआ। 1869ई. में इंग्लैंड से बैरिस्टरो की परीक्षा पास करने के बाद पहले राजकोट व फिर बम्बई में वकालत करने लगे। सन 1893ई. में एक मुकद्दमे की पैरवी करने दक्षिणी अफ्रिका चले गए। फिर वहीं रहकर वहां की गोरी

सरकारी द्वारा भारतीयो के प्रति रंग भेद की (अन्याय, शोषणवादी) नीतियों के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया। भारतीयो को वहां मत देने का अधिकार नहीं था, पंजीकरण करवाना पड़ता था तथा चुनाव पर कर देना पड़ता था[1] इन सबके खिलाफ अपने सत्य व अहिंसात्मक विचारधारा के आधार पर लगभग दो दशको तक संघर्ष करके भारतीय मूल के लोगों को उनके अधिकार दिलवाए।

गाँधी जी, 9 जनवरी 1915ई. में भारत वापिस आए। अहमदाबाद में साबरमति आश्रम की स्थापना की। पूरे एक वर्ष भारत का दौरा किया प्रथम युद्ध में अंग्रेजों को साथ दिया। सन 1917 में बिहार के चंपारन में सत्याग्रह आंदोलन किया (नीला के खेती करने वाले किसानो के शोषण के खिलाफ) सन् 1818 में अहमदाबाद में मजदूरों की मजदूरी बढवाई। गुजरात के खेड़ा जिले के किसानों के लगाम अदा करने में ढिल दिलाई दिलवाई 1919ई. में रौलट एक्ट के विरूद्ध सत्याग्रह 1919–20ई. में खिलाफत व असहयोग आन्दोलन की शुरूआत, 1930ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन व 1942ई. में 'भारत छोड़ो आंदोलन' में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उद्देश्य

1. गांधी जी को विचारधारा सत्याग्रह, अहिंसा आदि का मूल्यांकन।
2. गांधी जी की व्यक्तिगत उपलब्धियों का वर्णन।
3. भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधी जी की भूमिका।

गांधी जी की विचारधारा

गांधी जी ने मूल्य पर आधारित राजनीति का समर्थन किया। इसी संदर्भ में उन्होंने सत्याग्रह एवं अहिंसा की अवधारणा को प्रतिपादित किया।[2]

(प) **सत्याग्रहः** गांधी जी की सत्याग्रह की प्ररेणा हेनरी डेविड थोरो के निबंध 'सिविल डिसओबिडियंस' से मिली जबकि सर्वोदय की प्ररेणा रस्किन की पुस्तक 'अन टू द लास्ट' से। गांधी जी अपने जीवन में रस्किन और टाल्सटाय से बहुत ज्यादा प्रभावित थे।[3] वैसे तो गांधी जी की सत्याग्रह की अवधारणा उग्रवादियों की पद्धति 'निष्क्रिय प्रतिरोध' का ही विकसित रूप था। निष्क्रिय प्रतिरोध में शोषक के प्रति आक्रोश का भाव होता है जबकि सत्याग्रह में शोषक के प्रति मानवीय भाव रखा जाता है।[4] सत्य के सच्चे पुजारी के रूप में उनका विश्वास था कि सत्य ईश्वर है और ईश्वर सत्य है। इन विचारो के आधार पर गांधी जी की सत्याग्रह की विचारधारा हमारी प्राचीन वैदिक साहित्य के ज्ञान विज्ञान वेदो उपनिषदों व दर्शनो में निहित विचारधारा है। निर्भिकता उनके सत्याग्रह का आवश्यक अंग था।

(पप) **अहिंसाः** गांधी जी की अहिंसा की अवधारणा की जड़ भी हिन्दू धर्म है।[5] वेदो, उपनिषदों, दर्शनों में अहिंसा पर बल दिया गया है। महाभारत में अहिंसा परमोधर्म कहा गया है।

आगे चलकर अहिंसा बौद्ध, जैन, इसाई धर्म की शिक्षाएं बनी। गांधी जी ने अहिंसा की अवधारणा को मानव के कल्याण परोपकार से जोड़ दिया। उनका अहिंसा से तात्पर्य दया, अभेद, अमन आदि था। उन्होंने अहिंसा का अर्थ विरोधी के प्रति सहानुभूति एवं आदर का भाव, भय से मुक्ति तथा शांति के लिए प्रयास भी लगाया। उनके विचार में अहिंसा किसी कमजोर का हथियार नहीं हो सकता। जन आंदोलन के लिए अहिंसक होना अनिवार्य है।

(पपप) **स्वराज्यः** गांधी जी के लिए स्वराज्य का अर्थ जैविक स्वतंत्रता था। उन्होंने ब्रिटिश सभ्यता के खिलाफ संघर्ष करने के लिए कहा। गरमदल की स्वराज की मांग का समर्थन किया।[6]

(पअ) **आधुनिकताः** गांधी जी पश्चिमी के आधुनिकता के कुछ तत्वों समानता, प्रजातंत्र, मानव अधिकार के सिद्धांतों को अच्छा माना लेकिन अंग्रेजो को भारतीय के सन्दर्भ में भेदभावपूर्ण व्यवहार की भरपूर आलोचना की व पाश्चात्य सभ्यता की आलोचना की।[7] उन्होंने पश्चिम के प्रतिस्पर्धा संबंधी अवधारणा के विपरित भारतीय सहयोग की अवधारण को अच्छा माना।

(अ) **राष्ट्रवादः** गांधी जी ने राष्ट्रवाद को धार्मिक विकास का परिणाम माना उन्होंने पश्चिमी हिंसक राष्ट्रवाद विचारधारा के

International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 01, Issue 01)
Publishing Month: October 2013
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

खिलाफ भारतीय सभ्यता से से जोड़कर अहिंसक विचारधारा पर बल दिया। उन्होंने आर्थिक राष्ट्रवाद, सभी वर्गो के मुद्दो को उठाकर एक राष्ट्र की पहचान को मजबूत किया।

(अप) **समाजवादी विचारधारः** गांधी जी ने अलग तरह से सभी वर्गो के कल्याण की बात करके वर्ग समन्वय पर दिया उनके अनुसार आपसी सहमति से मजदूरों, किसानों की समस्याएं हल होनी चाहिए।

गांधी जी की कार्यप्रणाली

(प) गांधी जी सामान्य रहन सहन से लोगो को आकर्षित करते थे। सामान्य भारतीय गांधी में अपनी छवि देखते थे।[8] इसलिए गांधी जी भारत में विभिन्न वर्गो का सहयोग व समर्थन प्राप्त करने में कामयाब रहे।[9] उन्होंने अपने रचनात्मक कार्यक्रम के अन्तर्गत, ग्राम उद्योग, चरखा कातना नशाबंदी, हिन्दू–मुस्लिम एकता, अछूतों के उद्धार का कार्य।[10] सभी प्रकार की असमानताओं का विरोध आदि द्वारा समाज वे सभी वर्गो को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा। इस तरह उनके आने के बाद राष्ट्रीय आंदोलन का दायरा काफी व्यापक हुआ गांधी जी ने अहिंसा के माध्यम से एक नियंत्रित जनआंदोलन के द्वारा समाज के निचले तबके को भी एक बड़े

लक्ष्य, स्वतंत्रता के साथ जोड़ दिया।

(पप) समझौता एवं वार्ता पद्धति के कारण विपरित परिस्थितियों में भी आंदोलन को कमजोर नहीं होने दिया एक नई ऊर्जा का संचार करते रहे आंदोलन को बुरी तरह से कुचला नहीं जा सका।

(पपप) नैतिक मूल्यों पर आधारित राजनीति का अनुसरण किया। धर्म व राजनीति के बीच परस्पर संबंधो का तात्पर्य सामाजिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर शासन की व्यवस्था हो।

गांधी जी की विचारधारा व कार्यो की आलोचना व प्रत्युत्तर

(प) कुछ आलोचकों ने उन्हे एक राजनैतिक अराजकता फैलाने वाला कहा क्योंकि उन्होंने प्रभुसत्ता को चुनौति दी – लेकिन गांधी जी ने साध्य की प्राप्ति के लिए केवल साध्य साधनो का ही प्रयोग किया जो यह आरोप लगाया गया है वह साम्राज्यवादी विचारधारा के समर्थको के ही है।

(पप) साम्प्रदायिक दंगो व विभाजन को रोकने में असमर्थः गांधी पर हिन्दु प्रतीको जैसे– रामराज्य, खिलाफत आंदोलन में खलीफा का समर्थन[11] द्वारा एक तरह से किसी एक धार्मिक विचारधारा को बढ़ावा देने से था। यद्यपि गांधी जी हिन्दू–मुस्लिम एकता के महान समर्थक थे। देश के विभाजन के खिलाफ सबसे बाद तक डटे रहे। फिर भी देश के

International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 01, Issue 01)
Publishing Month: October 2013
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

विभाजन को रोक नहीं सके। गांधी जी द्वारा हिन्दू–मुस्लिम एकता के सभी प्रयास किए गए। 'रामराज्य' एक प्रतिकात्मक विचारधारा थी उन्होंने मुस्लमानों को राष्ट्रीय आंदोलन में जोड़ने के लिए खिलाफत का समर्थन किया। गांधी जी की भूल यह रही की वह धार्मिक एकता को धरातल पर लोगो के मन में नहीं बिठा पाए विरोधी विचारधाराओं के हितों, हिंसक साम्प्रदायिक से परिस्थितियों पर काबू से बाहर हो गई इसमें सभी जिम्मेदार माने जा सकते हैं। इसके लिए अकेले गांधी जी को दोष नहीं दिया जा सकता।

(पपप) कुछ विचार आदर्शवादीः गांधी जी के कुछ विचार जैसे पूंजिपति निर्धन के प्रन्यासी है आत्मनिर्भर गांव, आधुनिक उद्योगिकरण व मजदूरो के अधिकारों से मेल नहीं खाते। उनका समाजवाद आदि में कोई विश्वास नहीं था। लेकिन गांधी जी ने उस समय भारत को कमजोर आर्थिक स्थिति की हालत में गांव के आत्मनिर्भरता पर जोर दिया। चरखे, कुटीर उद्योग पर जोर दिया उससे लोगो में स्वालंबन की भावना पैदा हुई।

(पअ) मार्क्सवादियों ने इन पर बुर्जुआ हितों के लिए काम करने का आरोप लगाया व किसान मजदूर आन्दोलन को कमजोर करने का

International Journal of Engineering, Management, Humanities and Social Sciences Paradigms (IJEMHS)
(Volume 01, Issue 01)
Publishing Month: October 2013
An Indexed and Referred Journal with Impact Factor: 2.75
ISSN: 2347-601X
www.ijemhs.com

आरोप लगाया। लेकिन गौर से देखा जाए तो गांधी जी ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जो सभी वर्गो को साथ लेकर चलते थे। गांधी जी ने सभी वर्गो को राष्ट्रीय आन्दोलन से जोड़ा।

निष्कर्ष

गांधी जी ने अपनी विचारधारा सत्याग्रह व अहिंसा के बल पर शक्तिशाली साम्राज्यवादी शक्ति से संघर्ष किया। उन्होंने समाज के सभी वर्गो के समन्वय के बल पर सभी को राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा जिसके कारण आंदोलन का दायरा व्यापक हुआ असहयोग सविनय अवज्ञा आंदोलन कर अन्त में 'भारत छोड़ो आंदोलन' द्वारा लोगों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रति जागृति पैदा की। उन्होंने जन सामान्य के हितों की बात उठाकर उनको शक्तिशाली शासन के खिलाफ आंदोलन करने के लिए तैयार किया इस तरह से गांधी जी ने अपनी अनोखी विचारधारा व कार्यशैली के आधार पर लोगो की अन्तरात्मा में जगह पाई गांधी जी के साथ व अन्य विचारधाराओं के साथ लोग जुड़ते गए। इस तरह पूरे देश में जनआंदोलन चलाने में कामयाब रहे। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी व्यापक भूमिका रही।

सन्दर्भ सूची

(1) के. गोपालन, आधुनिक भारत, कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक छब्त्ज पृ.सं. 194।

(2) मणिकांत सिंह, भारतीय इतिहास एक विश्लेषण, किताब महल, पृ.सं. 249।

(3) कुंवर दिग्विजय सिंह, आधुनिक भारत का

इतिहास, स्मगपे छमगपे पृ.सं. 263 ।

(4) मणिकांत सिंह, भारतीय इतिहास एक विश्लेषण, किताब महल, पृ.सं. 249 ।

(5) मणिकांत सिंह, भारतीय इतिहास एक विश्लेषण, किताब महल, पृ.सं. 249 ।

(6) कुंवर दिग्विजय सिंह, आधुनिक भारत का इतिहास, स्मगपे छमगपे पृ.सं. 265 ।

(7) प्रताप सिंह, आधुनिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, रिसर्च पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 182 ।

(8) मणिकांत सिंह, भारतीय इतिहास एक विश्लेषण, किताब महल, पृ.सं. 252 ।

(9) विपिन चंद्र आदि, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय पृ.सं. 231 ।

(10) राम लखन शुक्ल आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय पृ.सं. 593 ।

(11) बी.एल. ग्रोवर यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, एस.चन्द, पृ.सं. 334 ।